सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 10 ● अंकः 318 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 26 दिसम्बर, 2024

मूल्य ₹ 3/-

आप तभी गरीब हैं, जब आप हार मान लेते हैं। सबसे जरूरी चीज है की आपने कुछ किया। ज्यादातर लोग केवल अमीर बनने की बात करते हैं और सपने देखते हैं। आपने कुछ किया है। –रॉबर्ट कियोसाकी

पहले दिन ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट पर... 7 | कड़े तेवर अपनाने से रूकेंगे... 3 | जनता भाजपाई अराजकता से... 2

एक बार फिर देश में नंबर वन पर आया 4PM

साल भर से लगभग हर महीने पहले स्थान पर रहकर बनाया कीर्तिमान

» 2024 में सबसे ज्यादा देखे जाने वाला राजनीतिक टिप्पणीकार चैनल बना

» 10 प्रतिशत व्यूज शेयर पर कब्जा किया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अपने जोश, जुनून के बल पर व पाठकों की पसंद से 4पीएम ने एक बार फिर विजयी पताका फहराई है। 4पीएम कल भी अव्वल था और आज भी पहले पायदान पर खड़ा है। यह उपलब्धि यह सिद्ध करता है कि 4पीएम ने कभी अपने कर्तव्यों में कोई कोताही नहीं की। बात चाहे जैसी हो, जिसकी हो, जिससे भी संबधित हो 4पीएम ने निष्पक्ष भाव से बात को कहा है और लिखा है शायद यही वजह है कि पूरे देश व दुनिया के लोग 4पीएम से कनेक्ट हुए हैं और उन्होंने इसमें अपना विश्वास जताया है।

4पीएम लगातार सवा साल से देश में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले राजनीतिक टिप्पणीकार चैनल बना हुआ है। उसने 2024 में एकबार फिर नंबर वन का तमगा अपने सिर पर बांधा है। 113.1 मिलियन व्यूज और 10 प्रतिशत व्यूज शेयर के साथ एकबार फिर शीर्ष पर कब्जा कर लिया है। चैनल के संपादक संजय शर्मा ने चैनल पर लोगों का भरोसा व समर्थन जताने के लिए आभार व्यक्त किया है। खबरों की दुनिया में सिरमौर बने 4पीएम का यहां तक का सफर पथरीले रास्तों से होकर गुजरा है। 4पीएम की खबरों को लेकर सरकारें सहज भाव नहीं रखती। हम तहतक जाकर पूरे निष्पक्ष भाव से सभी पक्षों की गहन पड़ताल करके सुधि पाठकों तक खबरों को लगातार पहुंचा रहे हैं। हमारे इस जज्बे को पाठकों का साथ भी मिल रह है।

Top Political Commentators on YouTube - Views Market Share (November 2024)
Excl. mainstream media. View count as of Dec 25 for **November uploaded videos only**

databeings — Colors indicate political leaning

Rank	Channel	#Views (Million)	Views Share	Rank	Channel	#Views (Million)	Views Share
1	4PM	113.1	10%	16	Headlines India	23.7	2%
2	DB live	102.4	9%	17	Deepak Sharma	22.0	2%
3	Dhruv Rathee	81.7	7%	18	Apka Akhbar	21.2	2%
4	Abhisar Sharma	78.1	7%	19	Punya Prasun Bajpai	20.4	2%
5	NMF News	68.8	6%	20	The Rajneeti	20.1	2%
6	Online News India	68.1	6%	21	Pragya Ka Panna	20.1	2%
7	Ajit Anjum	65.4	6%	22	Satya Hindi	19.6	2%
8	Ulta Chasma uc	61.3	5%	23	Global Bharat TV	19.5	2%
9	Ravish Kumar Official	56.0	5%	24	Sushant Sinha	18.9	2%
10	The Credible History	41.7	4%	25	The Deshbhakt	18.8	2%
11	National Dastak	[illegible]	3%	26	Pyara Hindustan	17.6	1%
12	CAPITAL TV	[illegible]	3%	27	The Live TV	17.4	1%
13	Bharat Samachar	[illegible]	[illegible]	28	DNAIndiaNews	16.8	1%
14	The Chanakya D[illegible]	[illegible]	[illegible]	29	The Janta Live	16.4	1%
15	The Jaipur Dialo[illegible]	[illegible]	[illegible]	30	Earth 24	16.2	1%
					Total	1186.5	100%

Note
1.We have significantly expanded ou[illegible]

thedatabeings.com contact@thedatabeings.com @DataBeings

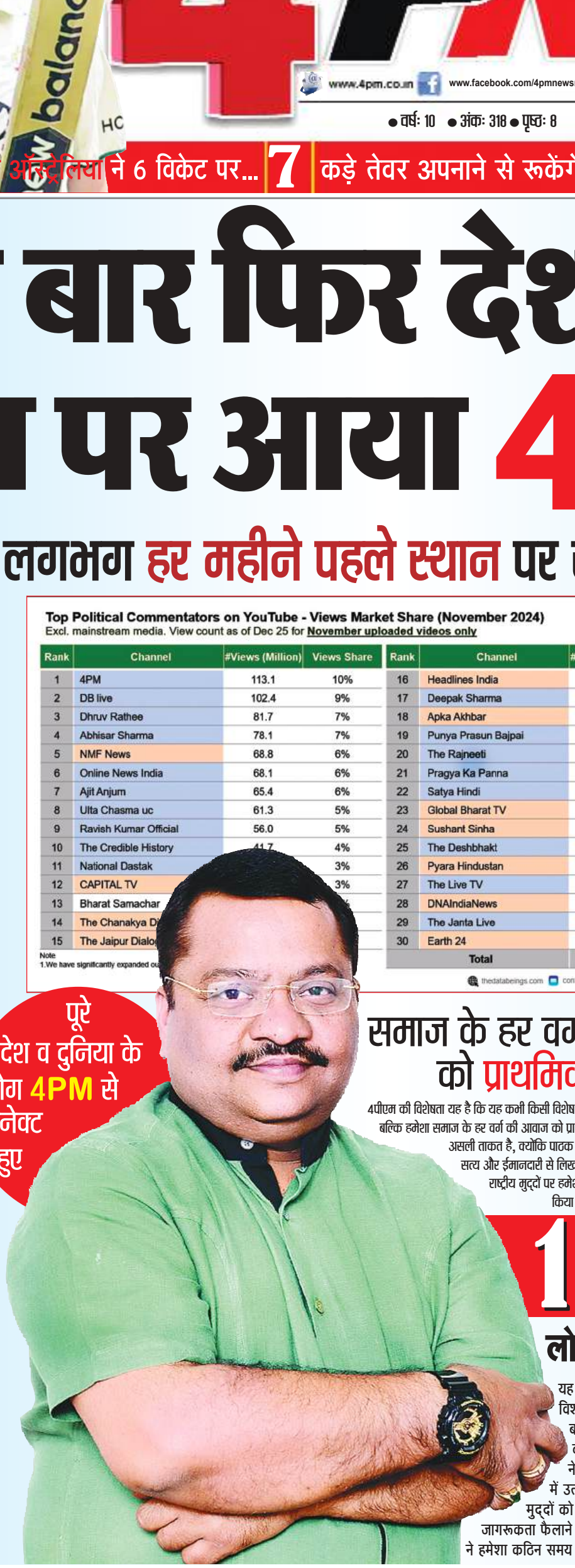

पूरे देश व दुनिया के लोग 4PM से कनेक्ट हुए

निष्पक्षता और सच्चाई का प्रतीक बना 4PM

4पीएम की यह सफलता कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह एक लंबी मेहनत, प्रतिबद्धता और सही मार्ग पर चलने का परिणाम है। चाहे बात किसी भी क्षेत्र की हो, चाहे वह राजनीति हो, समाज हो, या फिर अन्य कोई विषय, 4पीएम ने हमेशा निष्पक्षता से सच को सामने रखा है। इसके द्वारा उठाए गए मुद्दे न केवल पाठकों के बीच चर्चित होते हैं, बल्कि समाज में बदलाव की प्रक्रिया को भी प्रभावित करते हैं। यही वजह है कि 4पीएम ने न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई है और इसके पाठक वर्ग का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है।

सच को सामने लाना ही पहला सिद्धांत

इसकी सफलता का एक और कारण यह है कि यह अपने पाठकों के साथ गहरे और मजबूत संबंध स्थापित करने में सक्षम रहा है। 4पीएम ने हमेशा अपने पाठकों की चिंताओं और विचारों का सम्मान किया है। इसके परिणामस्वरूप, पाठकों ने इस पर विश्वास जताया है और इसे अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा माना है। इसका सिद्धांत सरल है-सच को सामने लाओ, बिना किसी डर और पक्षपात के।

समाज के हर वर्ग की आवाज को प्राथमिकता दी

4पीएम की विशेषता यह है कि यह कभी किसी विशेष विचारधारा या पार्टी के पक्ष में नहीं रहा, बल्कि हमेशा समाज के हर वर्ग की आवाज को प्राथमिकता दी है। यह निष्पक्षता ही उसकी असली ताकत है, क्योंकि पाठक जानते हैं कि 4पीएम जो लिखता है, वह सत्य और ईमानदारी से लिखा जाता है। इसने राजनीति, समाज और राष्ट्रीय मुद्दों पर हमेशा संतुलित और सटीक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जो पाठकों को सही दिशा दिखाता है।

113.1 मिलियन व्यूज के साथ सबको पछाड़ा

लोगों के विश्वास से आगे बढ़ा चैनल

यह सफलता केवल लोगों के विश्वास से ही नहीं आई, बल्कि यह भी इस तथ्य का प्रमाण है कि 4पीएम ने समय-समय पर समाज में उत्पन्न होने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया और समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया। 4पीएम ने हमेशा कठिन समय में भी सच्चाई का पक्ष लिया और अपनी निष्पक्षता से समाज के सामने सही मुद्दे रखे। आज 4पीएम की सफलता और विजयी पताका एक प्रतीक बन गई है, जो यह सिद्ध करता है कि जब पत्रकारिता निष्पक्ष और सच्ची होती है, तो वह न केवल समाज में बदलाव ला सकती है, बल्कि पाठकों का भी विश्वास जीत सकती है। 4पीएम की यात्रा एक प्रेरणा है, जो यह दर्शाती है कि जब उद्देश्य स्पष्ट और मार्ग सही होता है, तो सफलता स्वतः प्राप्त होती है।

लखनऊ में मनाया गया क्रिसमस 50 हजार लोग पहुंचे कैथेड्रल चर्च

हजरतगंज स्थित कैथेड्रल चर्च में क्रिसमस का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर 50 हजार लोग प्रभु ईसा मसीह के जन्मदिन की खुशियां मनाने पहुंचे। चर्च के मुख्य द्वार पर प्रभु ईसा मसीह के जीवन पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया गया। जिसने श्रद्धालुओं को गहराई से प्रेरित किया। फोटो: सुमित कुमार

जनता भाजपाई अराजकता से त्रस्त: अखिलेश यादव

» बोले- जंगलराज में बदल गया है उत्तर प्रदेश

» पुलिस हिरासत में मौत हो जाना आम बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा राज जंगलराज में बदल चुका है। भाजपा सरकार के सत्ता में आने के बाद से सत्ता संरक्षित अपराधियों पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया है। इनके हौसले इतने बढ़ गए हैं कि वे पुलिस की भी परवाह नहीं करते हैं। वैसे पुलिस ने भी अपनी फजीहत खुद अपने हाथों कर रखी है।

निर्दोषों के उत्पीड़न में उसने सत्तादल की सहयोगी बन कर लोकसभा और विधानसभा के उपचुनावों में अभद्रता और मर्यादा की सभी सीमाएं तोड़ दी। उन्होंने कहा कि जनता भाजपाई अराजकता से त्रस्त है। जनता को 2027 के विधानसभा चुनाव का इंतजार है, जब वो भाजपा को सत्ता से हटाकर उसके झूठे दावों का पुख्ता हिसाब करेगी।

कानून व्यवस्था तार-तार है। मुख्यमंत्री के तमाम बड़े-बड़े दावों के बावजूद अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। महिलाओं-

बच्चियों को रोज अपमानित होना पड़ रहा है। पुलिस थानों में भी भ्रष्टाचार, बलात्कार का बोलबाला है। पुलिस हिरासत में मौतों में प्रदेश अव्वल नम्बर पर हो गया है। सत्ता में आते ही दावा किया था कि अपराधी या तो जेल में होंगे या फिर प्रदेश से बाहर चले जाएंगे। सार्वजनिक छेड़छाड़ रोकने के लिए रोमियो स्क्वाड बनाने का एलान किया लेकिन इन दावों-एलानों के बाद भी महिलाओं और बच्चियों के साथ अपराध की घटनाएं बढ़ती गईं। वाराणसी में 8 साल की बच्ची की अपहरण के बाद हत्या की घटना विचलित करने वाली है। बच्ची की लाश प्राइमरी स्कूल में बोरी में मिली। बच्ची घर से कुछ सामान लेने दुकान गई थी।

राजधानी का बुरा हाल बैंक में हो रही है लूट

राजधानी लखनऊ का हाल तो और भी बुरा है। शासन-प्रशासन को खुली चुनौती देते हुए चिनहट स्थित इंडियन ओवरसीज बैंक में सेंध लगाकर 42 लॉकर काट कर अपराधी लूट ले गए। एटीएम की लूट भी हुई। चोरियां तो आए दिन की बातें हैं। ज्वैलर्स की दूकानों से माल पार करने की घटनाएं अक्सर होती हैं। महिलाओं के साथ छे?छा?, और लूट की घटनाएं आम है।

सपा प्रमुख ने शेयर किए कई वीडियो

बता दें कि इससे पूर्व मे अखिलेश यादव ने महाकुंभ का एक वीडियो शेयर किया था। इस वीडियो में बिजली के खंबे दिखाई दे रहे थे। इस वीडियो में अखिलेश यादव ने लिखा कि देखो भाजपा सरकार के अच्छे, बिना तार के खंबे। समाजवादियों ने पहले ही एक गाने में कहा था बिन बिजली के खड़ा है खंबा। भाजपा राज में कोई गाना अफसाना नहीं शत प्रतिशत सत्य है। बता दें कि अखिलेश यादव ने एक दिन पहले ही संगम पर पुलिस विभाग से संबंधित एक वीडियो शेयर किया था। इस वीडियो में अखिलेश ने कहा था कि भाजपा सरकार में प्रयागराज महाकुंभ 2025 की तैयारी की सच्चाई है। पुलिस विभाग का काम पहले पूरा हो जाना चाहिए था।

झूठ को सच बनाने की कोशिश कर रहे सीएम योगी: अजय राय

» अम्बेडकर पर टिप्पणी विवाद पर कांग्रेस अध्यक्ष ने भाजपा को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर हमला बोला। कहा कि वह गलतबयानी के जरिए झूठ को सच बनाने की कोशिश कर रहे हैं। प्रदेश और देश की जनता हकीकत से वाकिफ है और अब भाजपा के किसी भी नेता के बहकावे में नहीं आने वाली है।

उन्होंने जारी बयान में कहा कि डॉ. अम्बेडकर बंगाल विधानसभा से संविधान सभा में चुने गये थे पर उनकी सीट पूर्वी पाकिस्तान में चले जाने पर वह संविधान सभा सदस्य ही नहीं रह गये थे। आजादी के बाद संविधान सभा की प्रारूप समिति बननी थी तो उस पर परामर्श के लिए पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल दिल्ली में बिड़ला मंदिर के पीछे की दलित बस्ती में गये, जहां उन दिनों बापू रहा करते थे। वहां बैठक में डा. अम्बेडकर का नाम तय हुआ तब डा. आंबेडकर को पहले सदन में लाना जरूरी था। पंडित नेहरू ने पूना के एमआर जयकर को संविधान सभा से त्यागपत्र दिलाकर सीट खाली कराई। उस पर बम्बई प्रांत क्षेत्र से उपचुनाव में डा.अम्बेडकर संविधान सभा के लिए सदस्य चुने गये। उन्होंने कहा कि जहां तक 1952 के लोकसभा चुनाव में आंबेडकर के हारने का सवाल है तो वह कांग्रेस से अलग पार्टी में थे और चुनाव में नेताओं के परस्पर सम्मान के बावजूद पार्टियां परस्पर चुनाव लड़ती ही हैं। वहीं वाराणसी में प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के नेतृत्व में और आजमगढ़ में निवर्तमान प्रदेश महासचिव संगठन अनिल यादव के नेतृत्व में विरोध जताया गया। इसी तरह जौनपुर, फर्रुखाबाद, इटावा, औरैया, बाराबंकी, रायबरेली, प्रयागराज आदि जिलों में भी शांतिपूर्ण ढंग से निकाले गए। मार्च के बाद संबंधित पुलिस कमिश्नर और जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सौंपा गया।

कांग्रेस ने प्रदेशभर में निकाला डॉ. अम्बेडकर सम्मान मार्च

कांग्रेस ने प्रदेशभर में डॉ. अम्बेडकर सम्मान मार्च निकाला। गृहमंत्री अमित शाह की ओर से डा. अम्बेडकर पर की गई टिप्पणी की निंदा की। आरोप लगाया कि संविधान खत्म करने में नाकाम भाजपा अब बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर पर हमला कर रही है। लखनऊ में प्रदर्शन के बाद मंगलवार को कांग्रेस ने सभी जिला, शहर एवं विधानसभा क्षेत्रों में डा. अम्बेडकर सम्मान मार्च निकाला।

भाजपा मतदाता कार्डों की जांच कर बांट रही पैसा: आतिशी

» सीएम का आरोप- प्रवेश वर्मा के आवास पर महिलाओं को दिये गए 11 सौ रुपये के लिफाफे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने आप के खिलाफ केंद्र पर साजिश का आरोप लगाने के कुछ ही घंटों बाद भाजपा पर अरविंद केजरीवाल के नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में मतदाताओं को नकदी बांटने का आरोप लगाया है।

आतिशी ने दावा किया कि भाजपा मतदाता कार्डों की जांच कर रही है और उस निर्वाचन क्षेत्र के निवासियों को पैसे बांट रही है, जहां से केजरीवाल चुनाव लड़ते हैं। आतिशी ने खास तौर पर बीजेपी के पूर्व सांसद परवेश वर्मा की ओर इशारा करते हुए आरोप लगाया कि उन्हें अपने आधिकारिक आवास पर नकदी बांटते हुए

पकड़ा गया था। आतिशी ने कहा कि नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र की विभिन्न झुग्गियों की महिलाओं को वर्मा के आवास पर आमंत्रित किया गया और उन्हें एक लिफाफे में 1,100 रुपये दिए गए।

आतिशी ने कहा कि नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र जहां से अरविंद केजरीवाल चुनाव लड़ते हैं, वहां बीजेपी लोगों के वोटर कार्ड की जांच करके उन्हें पैसे बांट रही है। उन्होंने दावा किया कि प्रवेश वर्मा आज अपने सरकारी आवास पर पैसे बांटते हुए पकड़े गए जो उन्हें एक सांसद के तौर पर मिले थे। नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र के अलग-अलग इलाकों की अलग-अलग झुग्गियों से महिलाओं को वहां बुलाया गया और उन्हें एक लिफाफे में 1100 रुपये दिए गए।

संघ बनाम संत की लड़ाई शुरू

जगद्गुरु रामभद्राचार्य, शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और बाबा रामदेव नें मोहन भागवत के बयान पर किया काउंटर अटैक

» उनके बयान को 'तुष्टीकरण, अदूरदर्शी और राजनीतिक सुविधा' वाला बयान बताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली । बीजेपी की अंदरूनी लड़ाई अब सड़कों पर दिखायी दे रही है। बयानों की बारिश ने महौल को इतना गर्म कर दिया है कि कार्रवाई की तलवार बस चलने ही वाली है। कौन किस पर पहली कार्रवाई करेगा इंतजार बस इसी बात का है। संघ प्रमुख ने पहले संवाद के जरिये मामले को हल करना चाहा लेकिन जब बात नहीं बनी तो उन्होंने सार्वजनिक प्लेटफार्म से सरकार को समझाने की कोशिश की। लेकिन सरकार ने उनके बयान को लताड़ समझा जिससे बात बिगड़ गयी और निर्णायक स्थिति में पहुंच गयी है।

दरअस्ल हर मस्जिद में मंदिर खोजते लोगों को संघ प्रमुख मोहन भागवत ने नसीहत दी थी। उनके मुताबिक धर्म का अधूरा ज्ञान अधर्म करवाता है। मोहन भागवत का यह बयान अनजाने में दिया गया बयान हरगिज नहीं हो सकता। उनका यह बयान सरकार और संतों के मौजूदा काकटेल को लेकर था। उनके इस बयान पर पहला पलटवार जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने किया है। जगतगुरू ने भागवत के बयान को अदूरदर्शी बताया है। रामभद्राचार्य ने कहा है कि मोहन भागवत एक संगठन के संचालक हैं, वह हिंदू धर्म के संचालक नहीं हैं। उनका बयान तुष्टिकरण से प्रभावित है। संघ जब नहीं था, तब भी हिंदू धर्म था। उनकी राम मंदिर आंदोलन में कोई भूमिका नहीं, इतिहास इस बात का साक्षी है।

हमको अपना अतीत चाहिए ही चाहिए : जगतगुरू

जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने कहा है कि गवाही हमने दी, 1984 से संघर्ष हमने किया, संघ की इसमें कोई भूमिका नहीं। संभल में शुरू हुए मंदिर-मस्जिद विवाद पर रामभद्राचार्य ने कहा कि हमको अपना अतीत चाहिए ही चाहिए। सह-अस्तित्व का अर्थ है कि प्रत्येक अपने धर्म का पालन करे। उन्होंने अगर हमारे मस्जिद तोड़े हैं, तो हमें मंदिर चाहिए ही चाहिए। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद तो एक कदम और आगे बढ़कर भागवत पर 'राजनीतिक सुविधा' के मुताबिक बयान देने का आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने कहा है कि जब उन्हें सत्ता प्राप्त करनी थी, तब वह मंदिर-मंदिर करते थे। अब सत्ता मिल गई, तो मंदिर नहीं ढूंढने की नसीहत दे रहे हैं।

रामदेव बोले, पापियों को पाप का फल मिलना चाहिए

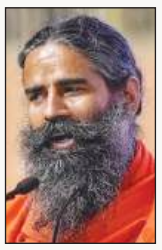

योग गुरु बाबा रामदेव ने संघ प्रमुख मोहन भागवत के मस्जिदों और मंदिरों को लेकर दिए गए बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह उनका अपना बयान है, लेकिन मेरा मानना है कि सनातन धर्म को नष्ट करने की कोशिश करने वाले आक्रमणकारियों को सबक जरूर सिखाना चाहिए। आक्रांताओं ने हमारे धार्मिक स्थानों, मंदिरों, तीर्थ और सनातन धर्म पर आक्रमण किया, ऐसे में न्यायालय उन्हें दंडित तो करेगा ही, लेकिन हमें भी बड़े तीर्थ स्थानों पर फैसले लेने होंगे। उन्होंने यहां तक कह दिया कि पापियों को पाप का फल मिलना चाहिए।

की थी मंदिर-मस्जिद से ऊपर उठने की वकालत

संघ प्रमुख ने मंदिर-मस्जिद विवादों के फिर से उठने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा था कि राम मंदिर के निर्माण के बाद कुछ लोगों को लग रहा है कि वो ऐसे मुद्दे उठाकर हिंदुओं के नेता बन सकते हैं। दुनिया को ये दिखाने की आवश्यकता है कि देश सद्भावना के साथ रह सकता है। रामकृष्ण मिशन में क्रिसमस मनाया जाता है। केवल हम ही ऐसा कर सकते हैं क्योंकि हम हिंदू हैं। हम लंबे समय से सद्भावना से रह रहे हैं। अगर दुनिया को यह सद्भावना देना चाहते हैं तो इसका एक मॉडल बनाने की जरूरत है।

कड़े तेवर अपनाने से रूकेंगे विवाद!

मंदिर-मस्जिद की वजह से जनमुद्दे होते हैं पीछे

» संघ को धर्म के नाम पर राजनीति करने वालों पर चलाना होगा चाबुक

» जनता को भी जागरूक करना सरकार का कार्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। धर्म की आड़ में चुनाव लड़ते-लड़ते भाजपा व संघ का मतभेद सामने आने के बाद सियासी गलियारें में अब यह चर्चा होने लगी है इस तरह के विवाद देश को नुकसान करेंगे। चूकि संघ समय-समय पर इशारे-इशारे में मन्दिर-मस्जिद, हिंदू, मुस्लिम के नाम पर राजनीति करने को सही नहीं ठहराता पर उसकी बातों को उसका राजनीतिक संगठन उतना तव्वजों नही देता और हर चुनाव में जनता के मुद्दों को छोड़कर वह धर्म व मंदिर पर चनावी लड़ाई ले आता है।

इसलिए संघ को अब पूरी कड़ाई से ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि उनके नेता गण ऐसे मुद्दों से दूर रहे हैं और देश के विकास व जनसमस्याओं का निराकरण करने की ओर ध्यान दें। अब जरा सोचिए, भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन यदि वह प्राणी बद्ध/मानव बद्ध पर उदासीन रहता है, कुतर्क करता है तो इसका दोषी सरकार नहीं है तो कौन है? क्योंकि जनता को भी तो जागरूक करना उसी का कार्य है। गाहे बगाहे होने वाले सांप्रदायिक, जातीय, क्षेत्रीय या आपराधिक हिंसा-प्रतिहिंसा की बातों को कुछ देर के लिए विराम भी दे दिया जाए, क्योंकि मानवीय सनक को काबू में रखना किसी भी प्रशासन के लिए जटिल कार्य है। फिर भी इस पर सियासी कारणों से रोक नहीं लगाना भी अधर्म है। वहीं, ऐसी ही हिंसक प्रवृत्ति से जुड़ा एक पूरक सवाल है कि यदि भारत सरकार पशु-पक्षी बद्ध के लिए लाइसेंस जारी करती है या फिर इस तरह की मिलीजुली मानवीय प्रवृत्ति पर खामोश रहती है तो मेरे विचार में वह एक अधार्मिक प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रही है और इससे उसका प्रशासन भी प्रभावित होगा। मेरा मानना है कि यदि देशवासियों को सही शिक्षा दी जाएगी, तो पुलिस व सैन्य खर्च में भारी कमी स्वत: आ जाएगी। आज यदि देश की जनता नाना प्रकार की नैतिक-भौतिक त्रासदी से जूझ रही है तो इसके पीछे उसकी धर्मनिरपेक्ष भावना ही है। जिसके चलते देशवासियों को सही शिक्षा की डिलीवरी नहीं हो पा रही है।

अहिंसा, त्याग और सेवा की भावना को बढ़ावा मिले

आश्चर्य होता है कि इसके बावजूद भी हमारे धर्मनिरपेक्ष नेता मदमस्त हैं। वो यह नहीं समझ पा रहे हैं कि हमारे देश में कौन सा धर्म सही शिक्षा दे रहा है और कौन सा धर्म भड़काऊ शिक्षा दे रहा है। इनकी शिनाख्त करके उसे सही राह पर चलने के लिए भारत का प्रशासन विवश नहीं करेगा, तो कौन करेगा। आप धर्मनिरपेक्ष हैं, बहुत अच्छी बात है। लेकिन आप प्रकृति धर्म, प्राणी धर्म और मानव धर्म से निरपेक्ष नहीं हो सकते, क्योंकि इसका सम्मिलित स्वरूप ही राजधर्म है। मनुष्यों को नियंत्रित रखने के लिए किसी न किसी धर्म की जरूरत होती है, जो उन्हें अधार्मिक होने से रोकता है। हिंसक प्रवृत्ति अधार्मिक है, भोगवाद अधार्मिक है, क्योंकि इससे रोग उत्पन्न होता है और बढ़ता है। वहीं, अहिंसा, त्याग और सेवा की भावना धार्मिक है, जिसे बढ़ावा देना चाहिए। यह प्राकृतिक गुण है, मानवीय गुण है और प्राणी मात्र के लिए हितैषी है। इस नजरिए से सनातन धर्म/हिन्दू धर्म इसका वाहक समझा जाता है। चूंकि हमारी सरकार धर्मनिरपेक्ष है, इसलिए वह इन नैसर्गिक गुणों से भी निरपेक्ष होना चाहती है, जो तमाम जन-समस्याओं की जननी है।

आरएसएस ढुलमुल रवैया न अपनाए

धर्म और अधर्म के बीच मौजूद सूक्ष्म विभाजन को स्पष्ट करते हुए लोक रचयिता गोस्वामी तुलसीदास महाकाव्य रामचरित मानस में लिखते हैं कि परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। यानी कि दूसरों का हित सोचना-करना ही धर्म है और दूसरों को पीड़ा पहुंचाना ही अधर्म है। जहां तक भारत और उसकी धर्मनिरपेक्षता का सवाल है तो खुद आरएसएस और उसका राजनीतिक संगठन भाजपा (जनसंघ का परिवर्तित स्वरूप) इस पर सवाल उठाते हुए तत्कालीन सत्ताधारी पार्टी कांग्रेस और समाजवादी दलों की सरकारों पर तुष्टिकरण के आरोप मढ़ती आई है। इससे स्पष्ट है कि धर्म के प्रति बढ़ती निरपेक्षता से बढ़ते अधर्म को आखिर कौन रोकेगा, यह यक्ष प्रश्न है और इस नीतिगत सवाल पर आरएसएस को ढुलमुल नहीं, बल्कि स्पष्ट रवैया अपनाना चाहिए।

हिन्दू-मुस्लिम तनाव से विकास में बाधा आएगी

इस बात में कोई दो राय नहीं कि हिंदू मंदिरों के पुनरुद्धार के उपायों से हिन्दू-मुस्लिम तनाव पैदा होगा और विकास में बाधा आएगी। शायद इसी खतरे से बचने के लिए कानून के जरिए यह तय किया गया कि देश की आजादी के वक्त जिस पूजा स्थल का जैसा स्वरूप था, उसे अंतिम मान लिया जाए। अब चाहे जिस किसी भी बहाने से ऐसे विवाद खड़े किए जाएं, वे सामाजिक समरसता के लिए ठीक नहीं होंगे और देश के विकास में बाधा बनेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे राजनीतिक दल शुद्र बुद्धि के हैं। यदि हमारा प्रशासन इतिहास के अन्याय को खुद दुरुस्त करते हुए अतिक्रमित हिन्दू धार्मिक स्थलों की पहचान करता और उन्हें मुक्त करवाता तो कोई बखेड़ा खड़ा नहीं होता। इतना ही नहीं, इस पूरे प्रकरण में न्यायिक दूरदर्शिता के अभाव और सियासी बेईमानी के चलते भी ये मामले दिन-प्रतिदिन उलझते चले जा रहे हैं। सीधा सवाल है कि जब भारत का विभाजन हिन्दू-मुस्लिम के आधार पर स्वीकार किया गया तो फिर हिंदुओं के हिस्से वाले हिंदुस्तान के ऐतिहासिक पापों का प्रक्षालन तो उसी वक्त कर दिया जाना चाहिए।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

श्याम बेनेगल का जाना

सोमवार को आई श्याम बेनेगल की मौत की खबर ने हिला कर रख दिया। इस खबर से तमाम सिनेमा प्रेमियों का दिल तोड़ दिया। दिग्गज फिल्ममेकर श्याम बेनेगल हिंदी सिनेमा के ऐसे फिल्मकार थे, जिनके सिर पर अच्छी कहानी को पर्दे पर पेश करने का जुनून सवार रहा। उन्होंने साल 1974 में फिल्म 'अंकुर' से निर्देशक के तौर पर अपना करियर शुरू किया तो फिर पलटकर नहीं देखा। वह लगातार एक के बाद एक सिल्वर स्क्रीन पर अपना जादू दिखाते ही चले गए। 'अंकुर' के बाद उन्होंने 'निशांत', 'मंथन', 'कलयुग', 'वेल डन अब्बा' जैसी तमाम बेहतरीन फिल्में बनाईं। सिल्वर स्क्रीन के अलावा उन्होंने छोटे पर्दे पर भी अपनी कलाकारी दिखाई थी। उन्होंने कई ऐसे टीवी प्रोग्राम बनाए थे, जिसके लिए टीवी की दुनिया में भी उनका नाम अमर रहेगा।

फिल्मों में एंट्री करने के 12 साल बाद उन्होंने टीवी डेब्यू किया था। साल 1986 में उन्होंने 'यात्रा' के नाम से अपना पहला टीवी शो बनाया था, जो कि ट्रैवल बेस्ड सीरीज थी। इस शो के 15 एपिसोड आए थे। वहीं इसे भारत के सबसे लंबे रेल मार्ग पर चलने वाली ट्रेन हिमसागर एक्सप्रेस पर फिल्माया गया था। यात्रा के बाद उन्होंने टीवी शो 'कथा सागर' बनाया। इसकी शुरुआत भी साल 1986 में दूरदर्शन पर हुई थी। पंकज बेरी, सईद जाफरी, सुप्रिया पाठक जैसे कलाकार इस शो में नजर आए थे। इसके 44 एपिसोड आए थे। उनकी यात्रा में भारत एक खोज मील का पत्थर साबित हुआ। श्याम बेनेगल साल 1988 में एक ऐसी टीवी सीरीज लेकर आए, जिसका नाम तब-तब जहन में आता है जब-जब बेनेगल का नाम लिया जाता है। 53 एपिसोड वाली ये सीरीज भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की किताब 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया'' पर आधारित थी। इस शो ने बच्चे-बच्चे को अपनी ओर आकर्षित किया। श्याम बेनेगल निश्चित तौर लंबे समय तक इस शो क जरिये याद किये जाते रहेंगे। यही नहीं उनके द्वारा बनाये गये टीवी शो अमरावती की कथाएं और संविधान भी दर्शकों के मन पर अमिट छाप छोड़ने में कामयाब रहे। साल 1995 में वो 'अमरवाती की कथाएं' नाम की एक टीवी सीरीज लेकर आए थे, जिसमें 'पंचायत' में प्रधान का रोल करने वाले रघुबीर यादव नजर आए थे। वहीं उनके साथ नीना गुप्ता भी इस शो का हिस्सा थीं। 'भारत एक खोज' के जरिए भारत का विशाल इतिहास दिखाने के बाद साल 2014 में श्याम बेनेगल 'संविधान' ना का एक शो लेकर आए। इस शो में 'संविधान' बनने के पीछे की कहानी दिखाई गई। इसके टोटल 10 एपिसोड हैं, जो यूट्यूब पर मौजूद है।

"साल 1986 में उन्होंने 'यात्रा' के नाम से अपना पहला टीवी शो बनाया था, जो कि ट्रैवल बेस्ड सीरीज थी। इस शो के 15 एपिसोड आए थे। वहीं इसे भारत के सबसे लंबे रेल मार्ग पर चलने वाली ट्रेन हिमसागर एक्सप्रेस पर फिल्माया गया था। यात्रा के बाद उन्होंने टीवी शो 'कथा सागर' बनाया। इसकी शुरुआत भी साल 1986 में दूरदर्शन पर हुई थी।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

लिंगभेद मुक्त कानून से ही न्याय संभव

क्षमा शर्मा

पिछले दिनों आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बंगलुरू में कार्यरत चौंतीस वर्षीय इंजीनियर, अतुल सुभाष की आत्महत्या काफी चर्चा में रही है। इस युवक ने आत्महत्या से पहले, नब्बे मिनट का एक वीडियो बनाकर डाला, जिसमें उसने बताया कि वह अपनी पत्नी और उसके घर वालों के व्यवहार से कितना परेशान है। उसे साल में मात्र तेईस छुट्टियां मिलती हैं और दहेज सम्बंधी, घरेलू हिंसा से जुड़े केस के सिलसिले में डेढ़ सौ यात्राएं करनी पड़ी हैं। उसने यह भी बताया कि वह अपने बच्चे के लिए चालीस हजार रुपये महीना देता है। और बच्चे के लिए पत्नी एक लाख रुपये मांग रही है, लेकिन बच्चे की शक्ल तक उसे याद नहीं, क्योंकि पत्नी कभी उससे मिलने नहीं देती। यह भी बताया कि मामले को रफा-दफा करने के लिए पत्नी तीन करोड़ रुपए मांग रही है।

अतुल का कहना था कि वह अब बिल्कुल रुपये नहीं देना चाहता क्योंकि जो रुपये वह दे रहा है, उसके ही खिलाफ इस्तेमाल हो रहे हैं। फिर वह टैक्स भी क्यों दे, क्योंकि सरकार उन्हीं टैक्स के पैसों से पुरुषों को परेशान करने वाले कानून बना रही है। अतुल ने वे चैट भी लगाए जिसमें उसकी सास कह रही है कि तेरे सुसाइड की खबर नहीं आई। अतुल कह रहा है कि आप तो पार्टी करोगे। इसके उत्तर में सास कह रही है कि पैसा तेरा बाप देगा। तेरा घर भी बिक जाएगा क्योंकि उसमें बहू का हिस्सा भी होता है। यह बात दीगर है कि यह युवक कितना परेशान रहा होगा कि उसे जीने के मुकाबले मृत्यु को चुनना पड़ा। कोई यों ही मौत को गले नहीं लगाता। ऐसी खबरों की भी कोई कमी नहीं, जिनमें महिला कानूनों का दुरुपयोग भारी पैमाने पर हो रहा है। इनमें बदले की भावना, जमीन-जायदाद के मामले, पति के घर वालों के साथ न रहना, विवाहेत्तर संबंध आदि शामिल हैं। अदालतें बार-बार इस ओर आगाह भी कर रही हैं। लेकिन कानूनों का दुरुपयोग करने वाली महिलाओं को शायद ही कोई सजा मिलती है।

दरअसल, कानून बनाने वालों के मन में अभी भी स्त्रियों की हाय बेचारी वाली छवि है। मान लिया गया है कि वे कभी झूठ बोल ही नहीं सकतीं। इसीलिए कानून सौ फीसदी महिलाओं के पक्ष में झुके हुए हैं। वहां अक्सर पुरुषों की कोई सुनवाई नहीं है। इसीलिए अतुल सुभाष की मृत्यु के बाद मीडिया के एक बड़े तबके में यह

मांग भी उठी कि कानूनों को जेंडर न्यूट्रल या लिंग भेद से मुक्त होना चाहिए। जो भी सताया गया हो, स्त्री या पुरुष, उसे कानून न्याय दे और अपराधी को सजा। अधिकांश देशों में जेंडर न्यूट्रल कानून ही हैं। वहां पुरुष को आरोप लगते ही अपराधी घोषित नहीं कर दिया जाता है। जबकि अपने यहां पुरुष का नाम, पता, फोटो, सब कुछ सार्वजनिक कर दिया जाता है। बहुत बार पुरुषों की नौकरी चली जाती है, क्योंकि कोई भी कम्पनी किसी विवादास्पद व्यक्ति को अपने यहां रखना नहीं चाहती। सामाजिक बहिष्कार भी झेलना पड़ता है। सालों साल अदालत के चक्कर लगाने पड़ते हैं। आरोप मुक्त हो भी जाए, तो भी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस नहीं मिलती। अतुल की आत्महत्या के बाद सोशल मीडिया पर अभियान भी चलाया गया कि अब निकिता जैसी लड़कियों से विवाह नहीं करना है, गांव से लड़की खोजकर लानी चाहिए। इन लोगों को शायद नहीं पता कि गांव में स्त्री कानूनों का कितना इस्तेमाल होता है। बहुत बार दुरुपयोग भी। हाल ही में अतुल की पत्नी निकिता का बयान भी आया था कि उसकी मां हर रोज उसे पांच-छह घंटे अतुल के खिलाफ भड़काती थी। उसने यह भी कहा था कि अतुल उसे मारता-पीटता था। इन दिनों की एक बड़ी समस्या यह भी है कि जीवन से एडजेस्टमेंट नाम की चीज गायब हो चली है। लगता है कि लड़ाई-झगड़े, एक-दूसरे के अपमान से ही चीजें सुलझ सकती हैं। जबकि बड़े से बड़े विश्व युद्ध के मसले भी अंतत: समझौते से ही सुलझते हैं। घर वाले भी युवाओं को समझाते नहीं, कई बार आग में घी डालने का काम करते हैं जैसा कि निकिता के बयान से जाहिर है। क्या पता कि अगर परिवार वालों द्वारा दोनों को समझाया गया होता, तो ऐसी स्थितियां न होतीं।

इसके अलावा ऐसी बातें भी होने लगीं कि सभी स्त्रियां ऐसा करती हैं। वे पुरुषों को फंसाती हैं, जबकि यह भी सच नहीं है। अपने देश में न जाने कितनी स्त्रियां दहेज के कारण घर से निकाली जाती रहीं हैं, सताई गई हैं, या जलाकर मार डाली गई हैं। अभी वे दिन स्मृतियों में ताजा हैं, जब अक्सर स्टोव बहू के ऊपर फट जाता था और वह इस कदर जल जाती थी कि प्राण नहीं बचते थे। मामूली बातों पर स्त्रियों को घर से निकाला जाना, उनके साथ मारपीट, दुष्कर्म भी हमारे समाज की कड़वी सच्चाइयां हैं। पति के मर जाने के बाद पत्नी को सती भी यही समाज करता था।

भाजपा के बड़े सियासी दांव को विपक्षी चुनौती

ऋतुपर्ण दवे

भारत में मजबूत लोकतंत्र के बावजूद राजनीतिक दलों के भविष्य की अनिश्चितता को दुनियाभर में बेहद आश्चर्य से देखा जाता है। अब वन नेशन-वन इलेक्शन (ओएनओई) की दिशा में कदम बढ़ गए हैं। निश्चित रूप से भारतीय मतदाताओं की सूझ-बूझ और परिपक्वता इसमें भी देखने लायक होगी। हर चुनावी बाजी आखिरी पल तक किस तरफ जा रही है- इस पर सिर्फ कयास ही सामने आते रहे जो ज्यादातर नतीजों के बाद औंधे मुंह गिरते दिखे। यही वजह थी कि हालिया महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के दौरान कोई भी राजनीतिक पंडित या चुनाव विश्लेषक वैसा साफ-साफ कहने की स्थिति में नहीं दिखा जो हरियाणा में दावे करते नहीं अघाते थे। भाजपा को रोकने के लिए विपक्ष ने बीते डेढ़-दो दशक में चाहे जितनी भी जुगत लगायी लेकिन आपसी होड़ खत्म करने में हर बार नाकामयाब रहे।

यह भी सही है कि देश में ज्यादातर क्षेत्रीय दल कांग्रेस से टूट उसकी ही चुनौती बने। ऐसे दल कभी मजबूत हुए और राजनीति की बदलती तासीर के चलते कभी नरम भी पड़े। ऐसा भी दौर आया जब लगा कि क्षेत्रीय दलों का भविष्य बिना कांग्रेस के साथ आए अंधकार में है। वक्त-वक्त पर अपना वजूद बचाने के लिए गठबंधन भी बने और कभी कांग्रेस को बड़ी तो कभी छोटी भूमिका देकर चुनाव लड़ना मजबूरी बनती चली गई। बताने की जरूरत नहीं कि भाजपा के खिलाफ ऐसे गठबन्धन कितने कामयाब रहे। अब जबकि पहले केंद्रीय कैबिनेट ने एक देश एक चुनाव संबंधी विधेयक को मंजूरी दी फिर लोकसभा में स्वीकारा गया और अब आम सहमति खातिर ज्वाइंट पार्लियामेंट्री कमेटी के पास भेज दिया गया। यहां सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से चर्चा होगी। लेकिन क्या इस बिल का कानून बनना आसान होगा? थोड़ा आंकड़ों को समझना होगा। प्रधानमंत्री मोदी के पास इस तीसरे कार्यकाल में पूर्ण बहुमत नहीं है।

लोकसभा में 543 सांसदों में बिल पारित होने के लिए 362 वोट जरूरी हैं। अभी एनडीए के पास 293 सांसद हैं और उसमें भाजपा के 240 हैं। यानी 69 वोट कम हैं। जाहिर है दूसरों की मदद चाहिये। वहीं राज्यसभा में भी बिल का पास करवाने के लिए 164 वोट जरूरी हैं जबकि एनडीए के पास 112 सांसद ही हैं। माना कि 6 मनोनीत सांसद हैं लेकिन फिर भी दूसरों का समर्थन जरूरी होगा। दो-तिहाई बहुमत हासिल करने के लिए यहां 52 वोट कम हैं। अगर विपक्ष पर नजर डालें तो लोकसभा में 205 और राज्यसभा में 85 सांसद हैं। विधि आयोग की 2012 की राय भी देखनी होगी जिसमें संविधान के मौजूदा ढांचे के अंदर एक साथ चुनाव नहीं करवाए जा सकने की बात थी। हालांकि, अब ये बीती बातें हैं। यूं भी विपक्ष भले कमजोर हो लेकिन उसकी सहमति जरूरी होगी। इधर कोविंद समिति की सिफारिशें लागू करने के लिए 18 संविधान संशोधनों की जरूरत होगी। लेकिन ज्यादातर के लिए राज्य विधानसभाओं की सहमति जरूरी नहीं होगी।

इधर कोविंद समिति की बात करें तो 47 राजनीतिक दलों ने अपने विचार समिति के समक्ष रखे। ओएनओई के समर्थन में 32 दल थे जिनका मानना है कि इससे संसाधनों की बचत होगी व आर्थिक विकास में तेजी आएगी। वहीं 15 दल साथ नहीं आए जिन्होंने इसे लोकतंत्र और संविधान के संघीय ढांचे के खिलाफ बताया। जरूरी संशोधनों के बाद ही लोकसभा और विधानसभाओं के कार्यकाल की समाप्ति एक साथ हो सकेगी। पहला बिल संविधान के अनुच्छेद 82ए में संशोधन करेगा ताकि लोकसभा और विधानसभाओं के कार्यकाल की समाप्ति एक साथ हो सके जिसमें राज्यों से सहमति जरूरी नहीं। स्थानीय निकाय चुनाव भी लोकसभा और विधानसभा के साथ करने के प्रस्ताव पर न्यूनतम 50 प्रतिशत राज्य विधानसभाओं की मंजूरी लेनी होगी। सारी तकनीकी प्रक्रियाओं के बाद ही ओएनओई हो पाएगा। कितना वक्त लगेगा कह पाना मुश्किल है। वर्ष 2025 में दिल्ली के चुनाव होने हैं। उसके बाद बिहार, फिर 2026 में प. बंगाल, तमिलनाडु, असम, केरल, पुडुचेरी के बाद 2027 में उत्तर प्रदेश तथा दूसरे राज्यों के विधानसभा चुनाव हैं। लेकिन क्या वन नेशन वन इलेक्शन की ओर बढ़ चली केन्द्र सरकार को कांग्रेस के नेतृत्व में 26 विपक्षी दलों का 'इंडिया' गठबंधन चुनौती दे पाएगा? बेशक इसने 2024 के लोस चुनाव में भाजपा को बैसाखियों के सहारे सरकार चलाने को मजबूर किया।

इससे उत्साहित इंडिया गठबंधन के दूसरे क्षेत्रीय दल भ्रम में आ गए कि लोकसभा की जीत में वे ही अहम थे। बस यहीं से गठबंधन में दरार पड़ने लगी। हरियाणा, फिर महाराष्ट्र में हार के बाद गठबंधन की फूट उजागर होने लगी और अब शामिल दल कांग्रेस के खिलाफ बोलते दिख रहे हैं। भाजपा आज कांग्रेस व शेष विपक्ष के लिए बड़ी चुनौती है। वन नेशन वन इलेक्शन भाजपा, विशेषकर प्रधानमंत्री मोदी का बड़ा सपना है जो देश में नए सियासी दांव के जरिये अलग इबारत लिखने को बेताब हैं। तेजी से मतदाताओं में पैठ जमाती भाजपा ने हमेशा क्षेत्रीय दलों को आगे कर पहले लुभाया फिर खुद को मजबूत करती गई। आज महाराष्ट्र की जीत और ओडिशा में बीजेडी का किला ढहाना सामने है। भारत में वन नेशन-वन इलेक्शन की दिशा में भाजपा ने बिसात बिछा दी है। बस देखना है कि बाजी किसके हाथ होगी?

सर्दीयों पेट संबंधी शिकायत हो सकती है। क्योंकि इस मौसम में गर्मागर्म पकोड़े, समोसे आदि के सेवन से अपच, दर्द और पेट फूलने जैसी समस्याएं होने लगती हैं। पाचन क्रिया सही तरीके से न होने से कई समस्याएं हो सकती हैं।

धनुरासन

धनुरासन पाचन अंगों के कार्य को बढ़ाने में सहायक है। इस आसन के अभ्यास से पाचन बेहतर होता है। यह मोटापा को कम करता है। शरीर को संतुलित रखता है। पेट की मांसपेशियो को मजबूत बनाता है। इस आसन को करने से भूख बढ़ती है। धनुरासन करने के लिए सबसे पहले पेट के बल लेट जाएं। घुटनों को मोड़ते हुए कमर के पास ले आएं। अब अपने हाथ से दोनों टखनों को पकड़ें। अब अपने सिर, छाती और जांघ को ऊपर की ओर उठाएं। अपने शरीर के भार को पेट के निचले हिस्से पर लेने का प्रयास करें। पैरों को पकड़कर आगे की ओर शरीर को खींचने की कोशिश करें। अपनी क्षमतानुसार लगभग 15-20 सेकेंड तक इस आसन को करें। सांस को धीरे धीरे छोड़े और छाती, पैर को जमीन पर रख आराम करें। वैसे तो धनुरासन करने के कई फायदे हैं, लेकिन कुछ खास तरह की समस्याओं में इस आसन को करने की मनाही होती है वरना ये उन परेशानियों को और ज्यादा बढ़ा सकते हैं।

वज्रासन

रात को खाने के बाद वज्रासन का अभ्यास कर सकते हैं। यह पाचन के लिए सबसे फायदेमंद योगासनों में शामिल है। इस आसन के अभ्यास से ऊपरी शरीर और पेट को स्ट्रेच करने में मदद मिलती है। खाली पेट वज्रासन के अभ्यास की सलाह दी जाती है लेकिन इस आसन को भोजन के बाद करना अधिक फायदेमंद होता है। वज्रासन नाड़ी को स्टिमुलेट करता है, जिससे खाना पचाने में आसानी होती है। यह सायटिका, नर्व से जुड़ी प्रॉब्लम और अपच से निजात दिलाने में मदद करता है। यह पेल्विक एरिया और पेट तक ब्लड फ्लो में सुधार लाता है, जिससे बाउल मूवमेंट में मदद मिलती है। यह शरीर में पौष्टिक तत्वों को अब्जॉर्ब करने में मदद करता है। यह लिवर फंक्शन में भी मदद करता है। यह पाचन से जुड़ी समस्याओं को खत्म करने में असरदार होता है। जिसे करने से हमारे स्वास्थ्य को काफी फायदा मिलता है।

भोजन को पचाने के लिए करें ये योगासन

योग शरीर और मस्तिष्क दोनों के लिए फायदेमंद होता है। तमाम बीमारियों से बचाव और उपचार में योग असरदार है। शरीर को लचीला बनाने, मांसपेशियों की मजबूती और अतिरिक्त वसा को घटाने के लिए नियमित योगासन के अभ्यास की सलाह दी जाती है। सर्दीयों पेट संबंधी शिकायत हो सकती है। क्योंकि इस मौसम में गर्मागर्म पकोड़े, समोसे आदि के सेवन से अपच, दर्द और पेट फूलने जैसी समस्याएं होने लगती हैं। पाचन क्रिया सही तरीके से न होने से कई शिकायत हो सकती हैं। इसलिए रात के भोजन के तुरंत बाद नहीं सोना चाहिए और कम से कम तीन घंटे का अंतराल हो, जिसमें पैदल चल सकते हैं या योग कर सकते हैं। इसलिए कुछ योगासनों का अभ्यास खाने के बाद करना चाहिए, इससे फटाफट भोजन पच जाता है और पेट संबंधी समस्याएं नहीं होती हैं।

गोमुखासन

गोमुखासन एक संस्कृत का शब्द है, जो दो शब्दों गौ और मुख से मिलकर बना है। इस तरह गोमुखासन का अर्थ होता है गाय का मुंह। यह एक ऐसा आसन है, जिसे करना बेहद ही आसान है। ऐसे में एक बिगनर भी इसका अभ्यास आसानी से कर सकता है। गोमुखासन रीढ़ और पेट की मांसपेशियों में खिंचाव लाने में मदद करता है। इससे पाचन में मदद मिलती है और खाने के बाद इस आसन के अभ्यास से पेट का इलाज होता है। पाचन क्रिया को आसान बनाने के लिए नियमित इस योग का अभ्यास किया जा सकता है। गोमुखासन के अभ्यास के लिए बाएं पैर को मोड़कर टखने को बाएं कूल्हे के पास रखें। अब दाहिने पैर को बाएं पैर पर इस तरह रखें कि दोनों घुटने एक-दूसरे को स्पर्श करें। अब हाथों को पीछे की ओर ले जाते हुए दाएं हाथ से बाएं हाथ को पकड़ लें। रीढ़ को सीधा रखते हुए लगभग 1 मिनट तक गहरी सांसें लें। धीरे-धीरे पुरानी अवस्था में आ जाएं।

पद्मासन

पद्मासन करने से मन शांत होने के साथ ही डाइजेशन भी इंप्रूव होता है। इसे करने के लिए पैरों को सामने की ओर फैलाकर बैठ जाएं। अपने बाएं पैर को मोड़ें और एड़ी को दाईं जांघ पर रखें। अब दाएं पैर को मोड़ें और एड़ी को बाईं जांघ पर रख लें। अपने हाथों से ज्ञान मुद्रा बनाएं और उसे घुटनों के ऊपर रख दें। अब इसी मुद्रा में बैठकर सामान्य रूप से श्वसन प्रक्रिया को जारी रखें। करीब 5 से 10 मिनट तक आप इस योगासन का अभ्यास कर सकते हैं। आप चाहें तो इस योगासन को सुबह और शाम दोनों समय कर सकते हैं।

हंसना मना है

डॉक्टर ने आदमी से पुछा, क्या आप का और आपकी बीवी का खून एक ही है? आदमी ने कहा, क्यों नही? ज़रूर होगा! पचास साल से मेरा ही खून जो पी रही है।

पति- अल्लाह ने तुम्हें 2 आंखे दी हैं, चावल से पत्थर नही निकाल सकती? पत्नी- अल्लाह ने तुम्हें 32 दांत दिए है, 2-4 पत्थर नही चबा सकते?

अर्ज है- रोज-रोज वजन नापकर क्या करना है, एक दिन तो सबने मरना है, चार दिन की है जिंदगी, खा लो जी भर के, अगला जन्म फिर 3 किलो से शुरू करना है!

थप्पड मारने पर नाराज वाईफ से हसबेंड बोला-आदमी उसी को मारता है जिससे वो प्यार करता है। वाईफ ने हसबेंड को 2 थप्पड मारे और बोली आप क्या समझते है मैं आपसे प्यार नही करती।

वाईफ- प्लीज बाइक तेज ना चलाओ, मुझे डर लग रहा है। सरदार- अगर तुझे भी डर लग रहा है, तो मेरी तरह आंखें बंद कर ले।

पत्नी- डॉक्टर साहब.. मेरे पति को रात में बडबड़ाने की आदत है, कोई उपाय बतायें? डॉक्टर-आप उन्हें दिन में बोलने का मौका दिया करें..

कहानी | लोमड़ी और अंगूर

एक लोमड़ी बहुत भूखी थी। वह खाने की तलाश में काफी समय तक घूमने के बाद भी उसे खाने को कुछ भी न मिला, तभी उसकी नजर पास के एक बाग पर पड़ी। उस बाग से बड़ी ही मीठी सुगंध आ रही थी। वह तेजी से बाग की ओर अपने कदम बढ़ाने लगी। उसने मन ही मन सोचा कि इस बाग में कुछ तो होगा, जो उसे खाने को मिलेगा। इसी सोच के साथ वह और तेजी से आगे बढ़ने लगी। जैसे ही वह बाग में पहुंची, तो उसने देखा कि बाग तो अंगूर की बेलों से लदा हुआ है। सभी अंगूर पूरी तरह से पक चुके हैं। अंगूरों की महक से उसने इस बात का अंदाजा लगा लिया कि अंगूर कितने रसदार और मीठे होंगे। उसने झट से अंगूरों को लक्ष्य बनाकर एक लंबी छलांग मारी, लेकिन वह अंगूरों तक पहुंच नहीं सकी और धड़ाम से जमीन पर आ गिरी। उसका पहला प्रयास विफल हुआ। उसने सोचा क्यों न फिर से कोशिश की जाए। वह एक बार फिर जोश से उठी और इस बार उसने अपनी पूरी ताकत से पहले से तेज अंगूरों की ओर छलांग लगा दी, लेकिन अफसोस कि उसका यह प्रयास भी बेकार गया। इस बार भी वह अंगूरों तक पहुंचने में नाकामयाब रही, लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने खुद से कहा कि अगर दो प्रयास विफल हो गए तो क्या, इस बार तो सफलता मुझे मिलकर ही रहेगी। फिर क्या था, इस बार फिर वह दोगुने जोश के साथ खड़ी हुई। इस बार उसने अब तक की सबसे लंबी छलांग लगाने की कोशिश की। उसने अपने शरीर की सारी ताकत को एकत्र कर एक लंबी दौड़ लगाई। उसे लगा था कि इस बार उसे अंगूर पाने से कोई नहीं रोक सकता, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। इस बार का प्रयास भी खाली गया। वह जमीन पर आ गिरी। इतने जतन करने के बावजूद वह एक भी अंगूर हासिल नहीं कर पाई। ऐसे में उसने अंगूर पाने की अपनी आस छोड़ दी और हार मान ली। अपनी विफलता को छिपाने के लिए उसने खुद ही बोला कि अंगूर खट्टे हैं, इसलिए इन्हें मुझे नहीं खाना।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बनी रहेगी। नौकरीपेशा को आज कर्ज लेना पड़ सकता है। माता को पुराना रोग उभर सकता है। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे।

वृषभ व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। भाग्य का साथ मिलेगा। नौकरी में चैन रहेगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक कष्ट संभव है।

मिथुन व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। नौकरी में मातहतों का सहयोग मिलेगा। सुख के साधन प्राप्त होंगे। नई योजना बनेगी। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा।

कर्क घर परिवार में धार्मिक अनुष्ठान पूजा-पाठ इत्यादि का कार्यक्रम आयोजित हो सकता है। कोर्ट-कचहरी के कार्य मनोनुकूल रहेंगे। मानसिक शांति रहेगी।

सिंह कुसगंति से बचें। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। पुराना रोग उभर सकता है। किसी दूसरे व्यक्ति की बातों में न आएं। लेन-देन में सावधानी रखें।

कन्या कोर्ट व कचहरी के कार्य अनुकूल रहेंगे। धन प्राप्ति सुगम होगी। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। भाइयों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य हो सकता है।

तुला धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। बड़ा लाभ हो सकता है। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। शेयर मार्केट से लाभ होगा।

वृश्चिक किसी मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। किसी वरिष्ठ प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा।

धनु आज आय में निश्चितता रहेगी। व्यापार ठीक चलेगा। निवेश सोच-समझकर करें। पिता को शारीरिक कष्ट संभव है। कारोबार की यात्रा में जल्दबाजी न करें।

मकर प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। नौकरी में प्रशंसा होगी। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। चोट व रोग से बचें।

कुम्भ कारोबार को लेकर चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। यश-ख्याति बढ़ेगी। दूर से शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। घर में मेहमानों का आगमन होगा। कोई मांगलिक कार्य हो सकता है।

मीन नौकरीपेशा पर वर्कलोड हावी रहेगा। आज चोट व रोग से बचें। किसी बड़ी समस्या से मुक्ति मिल सकती है। घर में किसी न्यायपूर्ण बात का विरोध हो सकता है।

बॉलीवुड | मन की बात

मेरे पिता ने मेरे लिए बहुत कुछ किया : हनी सिंह

हनी सिंह ने हाल ही में अपनी डाक्यूमेंट्री में नशे की लत और मानसिक स्वास्थ्य के साथ अपने संघर्ष की एक झलक दिखाई हैं। अपनी डाक्यूमेंट्री में ब्लू आइज गाने को लेकर वे रो पड़े। बताया कि कैसे उन्हें बाइपोलर डिसऑर्डर से पीड़ित होने के बाद मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए गाना छोड़ना पड़ा। साथ ही उन्होंने अपने संघर्ष के दिनों को भी याद किया है। हनी सिंह ने बताया, एक युवा घर पर बैठा रहता है और दोपहर के 12-30 बजे तक सोता रहता है। इस बीच, पापा काम पर चले जाते हैं और वापस आते हैं। जब वे मुझे देखते और हमारी आंखें मिलतीं, तो मुझे बहुत शर्म आती कि मैं कमा नहीं रहा हूं और मेरे पिता को इस उम्र में काम करना पड़ रहा है। हनी सिंह ने कहा, जब मैंने 2-2.5 साल काम नहीं किया तो वो समय बहुत कठिन गुजरा। उन्होंने कहा कि मेरे पिता ने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। मैं उनके लिए कुछ नहीं कर सका।मैं घर पर शांत नहीं बैठ सकता हूं। उन्होंने कहा कि जो भी डाक्यूमेंट्री देख रहे हैं। वे अपने माता पिता की देखभाल करें, वो एक बार गए तो वापस नहीं आएंगे। अभिनेता की निजी जिंदगी की बात करें तो उनकी शादी वर्ष 2011 में शालिनी तलवार से हुई। हालांकि, अब ये जोड़ी शादीशुदा जीवन में नहीं है और 2022 में इनका तलाक हो गया था। दोनों का तलाक मीडिया की खूब सुर्खियों मे रहा। उन्होंने अपनी शादी को लेकर कहा, मेरी दवाई कम हुई और तलाक के बाद मैं ठीक हुआ। एक्टर ने यह भी कहा कि जब दोनों के रास्ते अलग हो गए तो उनकी सेहत भी पहले से बेहतर होने लगी।

संजय लीला भंसाली की फिल्म लव एंड वॉर में दिखेंगे ओरी

संजय लीला भंसाली की फिल्म लव एंड वॉर का लोगों को बेसब्री से इंतजार है। इस फिल्म की कास्ट अब हर दिन के साथ और भी ज्यादा रोमांचक होती जा रही है। फिल्म में रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विकी कौशल जैसे बड़े सितारे पहले से ही मुख्य भूमिका में हैं। अब इस कास्ट में एक और दिलचस्प नाम जुड़ गया है।

सोशल मीडिया पर नजर आने वाले ओरी अब फिल्मों में दिखेंगे। एक रिपोर्ट के मुताबिक वह संजय लीला भंसाली की फिल्म लव एंड वॉर में अहम भूमिका में दिखेंगे। संजय लीला भंसाली की फिल्म लव एंड वॉर का लोगों को बेसब्री से इंतजार है। इस फिल्म की कास्ट अब हर दिन के साथ और भी ज्यादा रोमांचक होती जा रही है। फिल्म में रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विकी कौशल जैसे बड़े सितारे पहले से ही मुख्य भूमिका में हैं। अब इस कास्ट में एक और दिलचस्प नाम जुड़ गया है।

सोशल मीडिया सेंसेशन ओरी भी इस फिल्म में नजर आने वाले हैं। वह सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा लोकप्रिय हैं। अक्सर वह सेलेब्स के साथ फोटो क्लिक कराते हुए नजर आते हैं। अब ताजा रिपोर्ट में दावा किया जा रहा है कि वह भंसाली की फिल्म का हिस्सा बनेंगे। फिल्म में ओरी एक समलैंगिक पात्र का किरदार निभाएंगे, जो आलिया के सबसे करीबी दोस्त होंगे। आलिया फिल्म में एक कैबरे डांसर के रूप में नजर आएंगी।

इस किरदार के लिए आलिया ने काफी तैयारियां की हैं। वह फिल्म में अपने नए अवतार से दर्शकों पर फिर से जादू चलाने की पूरी कोशिश में हैं। फिल्म में रणबीर कपूर और विक्की कौशल भारतीय सशस्त्र बलों के अधिकारी की भूमिका में होंगे।

दीपिका का होगा कैमियो

दीपिका पादुकोण भी इस फिल्म में एक कैमियो रोल में नजर आएंगी, हालांकि उनके किरदार के बारे में अभी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है। दीपिका और भंसाली का एक साथ कई फिल्मों में काम कर चुके हैं। उन्होंने गोलियों की रासलीला राम-लीला, बाजीराव मस्तानी और पद्मावत जैसी चर्चित फिल्मों में एक साथ काम किया है। फिल्म के निर्माता इसे 20 मार्च, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज करने की तैयारी में जोर-शोर से जुटे हुए हैं।

17 जनवरी को ओटीटी पर दस्तक देगी पाताल लोक

पाताल लोक का पहला सीजन दर्शकों के दिलों पर अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहा था। अब मेकर्स नए साल पर दर्शकों के लिए इसका दूसरा सीजन लेकर आ रहे हैं। इस क्राइम थ्रिलर का दूसरा भाग 17 जनवरी को रिलीज होगा। इसमें जयदीप अहलावत, इश्वाक सिंह और गुल पनाग अपने-अपने किरदारों में वापसी करेंगे।

सोमवार को शो के निर्माता ने इसके रिलीज डेट का ऐलान किया। यह आठ एपिसोड वाली सीरीज सुदीप शर्मा द्वारा बनाई और कार्यकारी रूप से निर्मित की गई है। इस नए सीजन में 'हाथी राम चौधरी' (जयदीप अहलावत) और उनकी टीम को नई मुसीबतों का सामना करते हुए देखा जाएगा। फिलहाल, शो की कहानी अभी गुप्त रखी गई है।

इनके हाथ में निर्देशन की कमान अविनाश अरुण धावरे निर्देशित करेंगे। इसमें तिलोत्तमा शोम, नागेश कुकुनूर और जाहनु बरुआ जैसे कलाकार अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे। यह क्राइम ड्रामा प्राइम वीडियो पर प्रीमियर होगा।

पाताल लोक का पहला सीजन मई 2020 में रिलीज हुआ था और इसकी कहानी की गहराई ने दर्शकों को काफी ज्यादा आकर्षित किया था। इसे अविनाश अरुण और प्रोसित रॉय ने निर्देशित किया था। पहला सीजन भारतीय समाज के गहरे पहलुओं को उजागर करता दिखा था। खासकर मीडिया इंडस्ट्री की कार्यप्रणाली को लेकर। इसकी कहानी, अप्रत्याशित ट्विस्ट्स, रोमांचक सीन्स और सोचने पर मजबूर करने वाले क्लाइमैक्स ने दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ा था।

अजब-गजब | ये हैं दुनिया के सबसे लंबे लोग

ये है अफ्रीका की अनोखी जनजाति, जो दूध में जानवर का खून मिलाकर पीती है

दुनिया के अलग-अलग देशों और संस्कृतियों में खान-पान की भिन्न-भिन्न परंपराएं हैं। कहीं दूध से बनी चीजें खूब खाई जाती हैं, तो कहीं मांस मांस भोजन का अहम हिस्सा होता है। शाकाहार और मांसाहार को लेकर बहस तो चलती ही रहती है। आमतौर फूड हैबिड भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। आज हम आपको अफ्रीका की एक ऐसी जनजाति के बारे में बताने वाले हैं, जो दूध में जानवर का खून मिलाकर पीते हैं और इससे मेहमानों का स्वागत भी करते हैं।

दूध में खून मिलाकर पीने जैसी अजीब लगने वाली फूड हैबिट वाली जनजाति का नाम मसाई है। यह अर्द्ध-खानाबदोश जनजाति मुख्यतः दक्षिणी केन्या, उत्तरी तंजानिया और इथोपिया में निवास करती है। यह एक नीलोटिक जातीय समूह है।

मसाई जनजाति के लोगों का जीवन काफी हद तक जानवरों पर निर्भर होता है। सैकड़ों की संख्या में गाएं पालते हैं। मसाई जनजाति के पारंपरिक आहार में छह बुनियादी चीजें शामिल हैं- मांस, रक्त, दूध, फैट, शहद और पेड़ की छाल। वे ताजा दूध भी पीते हैं और कभी-कभी इसमें मवेशी का ताजा खून भी मिलाते हैं। दूध में खून मिलाकर आमतौर पर धार्मिक परंपराओं

के दौरान पीते हैं। इसे मसाई लोग बीमार पड़ने पर भी पीते हैं। ये लोग खून निकालने के लिए मवेशी के गले की नस को काटते हैं या उसे पंचर कर देते हैं।

अफ्रीका की मसाई जनजाति के लोग दुनिया के सबसे लंबे लोगों में से हैं। मसाई जनजाति के लोगों की औसत लंबाई 190.5 सेमी / 6.25 फीट है। लंबाईं इनकी बराबरी सिर्फ तुत्सी जनजाति के लोग ही कर पाते हैं।मसाई जनजाति के लोग एकेश्वरवादी हैं। एन्गाई नाम के देवता की पूजा करते हैं। मसाई जनजाति के एन्गाई देवता के दो रूप हैं- एन्गाई नारोक और एन्गाई ना न्योकी। एन्गाई नारोक हरी भरी घास और समृद्धि लाते हैं और एन्गाई ना न्योकी अकाल और भूख लाते हैं। हालांकि अब बड़ी संख्या में मसाई लोगों ने ईसाई धर्म भी अपना लिया है।

11 साल के बच्चे और तोते की अनोखी दोस्ती दोनों समझते हैं एक-दूसरे की भाषा

यूपी के कन्नौज जिले में एक तोते और एक बच्चे की दोस्ती देखकर हर कोई हैरान है। दोस्ती भी ऐसी खास जिसको देखकर सभी तारीफ कर रहे हैं। बच्चा तोते की जुबान में बात करता है, तोता भी बच्चे की जुबान समझता है। इसके बाद दोनों एक दूसरे के पास आकर बात भी करते हैं। वहीं, दोनों एक दूसरे से प्यार भी करते हैं। बच्चा जहां-जहां जाता है, तोता उसके साथ ही रहता है। ऐसे जब बच्चा उस तोते को बुलाता है, तो वह उसके होठों पर आकर किस करने लगता है। सबसे मनमोहक करने वाली तस्वीर यही सामने रहती है। करीब 11 वर्षीय ऋतिक कुशवाहा के पिता कृष्णकांत कुशवाहा को कुछ सालों पहले यह दोनों तोते घायल अवस्था में मिले थे। इसके बाद वह उसको घर ले आए और अपने बच्चों की तरह पालन पोषण किया। अपने ऑफिस से लौटते वक्त कृष्णकांत कुशवाहा को करीब 2 साल पहले यह दोनों तोता सड़क पर मिले थे। इसके बाद यह उसको अपने घर ले आए और इसका इलाज किया, जिसके बाद उसको अपने बच्चों की तरह पाला। यह सब देख कृष्णकांत कुशवाहा का बेटा भी इन पक्षियों की सेवा में लगा रहता था। उनको खाना देना, उनको पानी देना, समय से उसकी दवा का ध्यान रखना। इसके बाद अब इन पक्षियों ने इस पूरे परिवार को अपना परिवार मान लिया है। सुबह उठते ही यह लोग खाना पानी के लिए मम्मी पापा और बच्चे के निकनेम से उसको पुकारने लगता है। कृष्णकांत कुशवाहा का बेटा ऋतिक कुशवाहा अभी 12 वर्ष का है। यह दोनों तोते उसके साथ ऐसे खेलते हैं। मानों जैसे दोनों एक जैसे ही हैं। जब भी वह उसको पुकारता है, उनकी भाषा में सुनके तोते उसके पास उससे प्यार करने आ जाते हैं। दोनों एक दूसरे को ऐसे प्यार करते हैं। मानों कब के बिछड़े आज मिले या फिर कुछ ऐसी एक दूसरे से बातें करते हुए नजर आते हैं। ऋतिक कुशवाहा ने बताया कि वह उनके साथ बहुत खुश रहता है। वह उनकी भाषा में बात भी कर लेता है। उनको कोई कुछ कहता है, तो वह उसके पास प्यार करने के लिए आ जाते हैं। वह जहां जाता है। यह उसके पीछे लगे रहते हैं। सुबह खाना पानी देना, उसके बाद स्कूल जाना लौट के आना फिर इनका ख्याल रखना यह ऋतिक की दिनचर्या में शामिल है। इन दोनों को जब भी भूख लगती है। तब यह लोग ऋतिक के घर के नाम कुसु-कुसु से पुकारते हैं। ऋतिक के पिता कृष्णकांत कुशवाहा बताते हैं कि 2 साल पहले कुछ अस्त-व्यस्त हाल में यह दोनों तोता मुझे रास्ते में मिले थे। इसके बाद वे इन्हें अपने घर ले आया। तब से यह परिवार के सदस्य की तरह रहते हैं। मेरी गाड़ी का हार्न बजते ही वह जान जाते हैं कि वह आ गए। जहां सुबह उठते ही यह लोग खाने-पानी को लेकर मम्मी पापा की पुकार लगने लगते हैं। वहीं, यह तोते उनके बेटे के साथ ऐसे ही खेलते हैं, जैसे मानो यह इनका ही भाई है। जिसको देखकर एक बहुत अच्छा अनुभव मिलता है। इन दोनों का प्यार देखकर बहुत खुशी भी मिलती है, दोनों तोता अधिकतर समय घर में खुले ही रहते हैं। जहां मन होता है, वहां आते जाते हैं।

द सैटेनिक वर्सेस के पुन : प्रकाशन की अनुमति से मुस्लिमों में उबाल

» पूछे जा रहे सवाल, आखिर क्यों कर रही ऐसा सरकार

» किताब का पुन: प्रकाशन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की कोशिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में इस समय एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ है। सलमान रश्दी की लिखी किताब द सैटेनिक वर्सेस के पुन:प्रकाशन की अनुमति मिल जाने के बाद इस किताब को लेकर मुसलमानों का गुस्सा गहरा रहा और किताब को लेकर उनकी प्रतिक्रियाएं तीव्र हो रही हैं। मुसलमानों का मानना है कि इस किताब ने उनके धर्म और पैगंबर का अपमान किया है, और इसका प्रकाशन उनके लिए बहुत बड़ा आघात हो सकता है।

इस किताब को लेकर उनकी संवेदनाएं अतीत में इतनी ज्यादा उबाल पर थीं कि इसके विरोध में सड़कों पर भारी प्रदर्शन हुए थे, और कई स्थानों पर धार्मिक असहमति के कारण हिंसा भी हुई थी क्योंकि भारत में मुस्लिम समुदाय की धार्मिक भावनाएं बहुत संवेदनशील होती हैं।

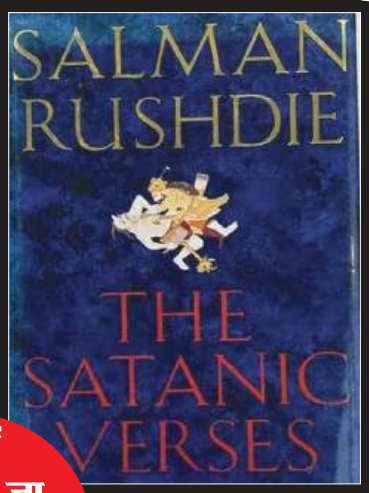

क्यों छिड़का जा रहा है मुस्लिमों के जख्मों पर नमक

क्यों हो रहा है किताब का पुन:प्रकाशन

बड़ा सवाल यही है कि आखिर मोदी सरकार इस किताब के पुन: प्रकाशन की अनुमति क्यों दे रही है? एक ओर जब संघ प्रमुख मोदी सरकार की कार्यप्रणाली को लेकर लगातार पेंच कस रहे हैं। ऐसे में यह फैसला यकीनन किसी विशेष राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उठाया गया प्रतीत हो रहा है। वर्तमान में भारतीय राजनीति में मुस्लिम समुदाय और उनकी धार्मिक भावनाओं को एकतरफा नजरिए से देखा जा रहा है।

मोदी सरकार के लिए यह मुद्दा एक बड़ा राजनीतिक दांव हो सकता है। भाजपा ने हमेशा से यह दावा किया है कि वह धार्मिक स्वतंत्रता के पक्ष में है, लेकिन इस तरह के कदम उठाकर सरकार अपने राजनीतिक समर्थन को भी सुनिश्चित करना चाहती है। बीजेपी को शायद लगता है कि भारत में एक अलग तरह का राजनीतिक विमर्श स्थापित होगा, जिसमें मुस्लिम वोट बैंक को प्रभावित किया जा सकता है। इसके विपरीत, सरकार यह भी जानती है कि इस किताब को लेकर असहमति रखने वाले लोग अक्सर धार्मिक उन्माद को बढ़ावा देने के आरोप में सरकार का विरोध करते हैं।

दोबारा पाबंदी लगाने की मांग

ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मुफ्ती शहाबुद्दीन रिजवी बरेलवी ने कहा कि अब किताब पर प्रतिबंध के मामले में अंतिम फैसला हो चुका है और प्रतिबंध हटा लिया गया है। इस किताब में इस्लाम के खिलाफ वो बातें लिखी गई हैं जो जुबान पर नहीं लाई जा सकती हैं। इसमें सनातनी देवी देवताओं के खिलाफ भी अपशब्द कहा गया है। मैं उन प्रकाशकों से अपील करता हूं कि वह इस किताब को न छापें। अगर कोई प्रकाशक किताब छापता है और इससे माहौल खराब होता है तो इसके लिए लेखक और पाठक दोनों जिम्मेदार होंगे। हम लोग इस किताब की बिक्री नहीं होने देंगे। मैं भारत सरकार से अपील करता हूं कि दोबारा से इस किताब पर पाबंदी लगाई जाए।

धर्मनिरपेक्षता को मानने वाले कर सकते हैं समर्थन

भारत में इस किताब के पुन:प्रकाशन से सामाजिक और धार्मिक तनाव बढ़ सकता है। मुसलमानों के विरोध के बाद यह संभव है कि कई इलाकों में प्रदर्शन हों, और यदि स्थिति बिगड़ी तो हिंसा की संभावना भी हो सकती है। यह सरकार की छवि पर भी असर डाल सकता है, क्योंकि इससे यह संदेश जा सकता है कि सरकार मुसलमानों के जख्मों पर नमक छिड़कने के लिए जिम्मेदार है। वहीं, हिंदू समुदाय के कुछ हिस्से इसे एक स्वतंत्रता का प्रतीक मान सकते हैं, जो भारतीय धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की कोशिश करता है। कई बुद्धिजीवी और लेखक इसे साहित्यिक स्वतंत्रता के उल्लंघन के रूप में भी देख सकते हैं, जो भारत में खुले विचारों और बहसों के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

कानून व्यवस्था से कोई समझौता नहीं : रेवंत रेड्डी

» सीएम ने सिनेमा स्टार्स के साथ की बैठक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पुष्पा 2 भगदड़ विवाद के कारण अभिनेता अल्लू अर्जुन लगातार सुर्खियों में हैं। इस बीच, तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने तेलुगु सिनेमा के निर्देशक और अभिनेताओं से मुलाकात की। इस बैठक पर सभी की नजरें थीं कि संध्या थिएटर में हुई भगदड़ पर सीएम कुछ बड़ी बात कह सकते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, बैठक में सुरेश बेबी, दामोधर, केएल नारायण, चिन्ना बाबू, बीवीएसएन प्रसाद, सुधाकर रेड्डी, फिल्म निर्देशक कोरतला शिवा, अनिल रविपुडी, के राघवेंद्र राव, प्रशांत वर्मा, नागार्जुन, शिव बालाजी और वेंकटेश शामिल थे।

दिलचस्प बात यह है कि कोंडा सुरेखा विवाद के बाद यह पहली बार था, जब नागार्जुन ने मुख्यमंत्री से मुलाकात की। सिनेमा स्टार्स के साथ हुई बैठक में मुख्यमंत्री ने तेलुगु फिल्म उद्योग को पूरी तरह से समर्थन करने का आश्वासन दिया है। उन्होंने संध्या थिएटर में हुई भगदड़ के मामले पर बात करते हुए कहा कि सितारों को अपने फैंस को कंट्रोल करने की जिम्मेदारी भी लेनी चाहिए। उनका कहना है कि कानूनी व्यवस्था से किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता है।

पहले दिन ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट पर बनाये 316 रन

» बॉक्सिंग डे टेस्ट : बुमराह ने तीन विकेट झटककर भारत की कराई वापसी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेलबर्न। गुरुवार से भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच मेलबर्न में बॉक्सिंग डे टेस्ट की शुरुआत हुई। दोनों टीमों के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का यह चौथा टेस्ट है। फिलहाल सीरीज 1-1 से बराबर है। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचने के लिहाज से अगले दोनों टेस्ट महत्वपूर्ण हैं। मेलबर्न में बॉक्सिंग डे टेस्ट के पहले दिन का खेल खत्म हो चुका है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम ने अपनी पहली पारी में छह विकेट गंवाकर 311 रन बना लिए हैं। स्टीव स्मिथ 68 रन और कप्तान पैट कमिंस आठ रन बनाकर नाबाद हैं।

इस मैच के लिए शुभमन गिल की जगह वॉशिंगटन सुंदर को मौका दिया। कंगारुओं की शुरुआत अच्छी रही और 19 साल के डेब्यूटांट सैम कोंस्टास ने उस्मान ख्वाजा के साथ पहले विकेट के लिए 89 रन की साझेदारी निभाई। उन्होंने अर्धशतक जमाया। हालांकि, इसके बाद रवींद्र जडेजा की गेंद पर एल्बीडब्ल्यू आउट हो गए। इसके बाद ख्वाजा ने स्टीव स्मिथ के साथ दूसरे विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी निभाई। ख्वाजा ने टेस्ट करियर का 27वां अर्धशतक लगाया। वह बुमराह की गेंद पर आउट हुए। वहीं, हेड खाता नहीं खोल सके। उन्हें बुमराह ने क्लीन बोल्ड किया। बुमराह ने फिर मिचेल मार्श को भी सस्ते में निपटा दिया। वह चार रन बना सके। लाबुशेन ने 145 गेंद में सात चौके की मदद से 72 रन की पारी खेली। भारत की ओर से बुमराह ने तीन विकेट लिए। वहीं, आकाश दीप, जडेजा और सुंदर को एक-एक विकेट मिला।

दोनों टीमों में एक-एक बदलाव हुआ। ऑस्ट्रेलिया ने जोश हेजलवुड की जगह स्कॉट बोलैंड और भारत ने

जसप्रीत बुमराह ने हासिल की सर्वोच्च टेस्ट रैंकिंग

दुबई। भारतीय गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने आस्ट्रेलिया में अपने शानदार प्रदर्शन के चलते आईसीसी की पुरुष टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में अपना शीर्ष स्थान मजबूत कर लिया। तेज गेंदबाज के अब 904 रेटिंग अंक हो गए हैं। इसी के साथ उन्होंने भारतीय टीम के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। 2016 में अश्विन ने सर्वोच्च रेटिंग (904) हासिल की थी। इस तरह वह आईसीसी इतिहास में संयुक्त रूप से सर्वोच्च रेटिंग वाले भारतीय टेस्ट गेंदबाज बन गए। दक्षिण आफ्रीका कगिसो रबाडा दूसरे और ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवड तीसरे पायदान पर हैं। वहीं रोहित शर्मा और विराट कोहली को नवीनतम आईसीसी रैंकिंग में बड़ी गिरावट देखने मिली है। कोहली खराब प्रदर्शन के चलते शीर्ष 20 से बाहर हो गए हैं और एक स्थान के नुकसान के साथ 21वें नंबर पर खिसक गए हैं। पिछले कुछ समय से खराब फॉर्म से गुजर रहे कप्तान रोहित शर्मा को पांच स्थान का नुकसान हुआ है और वह 35वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

केजरीवाल एंटी नेशनल : अजय माकन

» भाजपा की सरकार भी विफल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने पार्टी नेता अजय माकन और अन्य सदस्यों के साथ मौका मौका हर बार धोखा शीर्षक से एक पुस्तिका लॉन्च की। इस पुस्तिका का उद्देश्य दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और आम आदमी पार्टी (आप) दोनों सरकारों की विफलताओं और अधूरे वादों को उजागर करना है। इस दौरान कांग्रेस नेता अजय माकन ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम प्रमुख अरविंद केजरीवाल पर जमकर निशाना साधा। माकन ने साफ तौर पर कहा कि केजरीवाल को अगर एक शब्द में परिभाषित किया जा सकता है तो वह शब्द है फर्जीवाल। इस व्यक्ति की घोषणाएं सिर्फ फर्जीवाड़ा हैं, उसके अलावा और कुछ नहीं हैं।

माकन ने कहा कि अगर वह (केजरीवाल) इतने गंभीर हैं तो पंजाब में इन कामों को करके दिखाएं क्योंकि वहां तो कोई उपराज्यपाल भी नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया, वह एंटी नेशनल हैं, उनकी कोई विचारधारा नहीं है सिवाय अपनी निजी महत्वाकांक्षा के। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, केजरीवाल की पार्टी का जन्म लोकपाल और जनलोकपाल के लिए हुआ था। कांग्रेस नेता ने कहा कि दिल्ली सरकार कहती है कि हम काम की राजनीति करते हैं, लेकिन सच्चाई है कि ये काम की राजनीति भी नहीं करते। जेब में 2 रुपए का पेन रखते हैं, पार्टी का नाम आम आदमी रखा है, लेकिन राजा की तरह शीशमहल में रहते हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार एक-दूसरे पर आरोप लगाती रहती है, जबकि परेशान जनता होती है, जो इन दोनों के बीच फंसी है। इन दोनों सरकारों ने बीते कई वर्षों में दिल्ली को नफरत का बाजार बना दिया है। यहां बेटियां सुरक्षित नहीं हैं और दिल्ली को बनाने वाले लोगों के सम्मान से लगातार समझौता किया गया है।

कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर करने पर चर्चा करेंगे : आप

कांग्रेस को लेकर आम आदमी पार्टी के नेताओं में भारी नाराजगी है। सूत्रों के हवाले से खबर है कि इंडी गठबंधन से कांग्रेस को बाहर कराने के लिए आप दूसरी पार्टियों से बातचीत करेगी। आप का कहना है कि कांग्रेस भाजपा के साथ मिलकर काम कर रही है। केजरीवाल के खिलाफ एफआईआर की मांग व कांग्रेस के नेताओं के बयानों को लेकर आप के नेताओं में नाराजगी है। प्रदेश युवक कांग्रेस के अध्यक्ष एडवोकेट अक्षय लाकड़ा ने केजरीवाल और पार्टी से जुड़े अन्य सदस्यों पर गंभीर आरोप लगाते हुए उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की है।

गोडसे की विचारधारा मानने वालों ने किया बाबा साहेब का अपमान

» कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डोटासरा का भाजपा पर बड़ा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बीकानेर। राजस्थान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने भाजपा पर तीखा प्रहार करते हुए आरोप लगाया कि यह पार्टी नाथूराम गोडसे की विचारधारा का अनुसरण करती है और संविधान निर्माता बाबा साहेब आंबेडकर का अपमान कर रही है। उन्होंने केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर हमला बोलते हुए कहा कि उनको आंबेडकर पर दिए गए अपने बयान के लिए माफी मांगनी ही पड़ेगी।

डोटासरा ने कहा कि संसद में अडाणी के मुद्दे से जनता का ध्यान भटकाने के लिए ऐसी बयानबाजी की जा रही है। उन्होंने शिक्षा मंत्री मदन दिलावर पर भी तंज कसते हुए कहा, वे काहे के शिक्षा मंत्री हैं? उनका ऐसा कोई काम बताएं जिससे उन्हें शिक्षा मंत्री कहा जा सके। पहले उन्होंने कहा था कि शीतकालीन अवकाश नहीं होंगे और अब आदेश निकालकर छुट्टियों की घोषणा कर दी।

बिहार में बवाल, नीतीश की प्रगति यात्रा पर सवाल

» सुलग रहे छात्र आंदोलन सरकार के लिए खतरा अच्छी नहीं है देश में छात्रों की स्थिति

» ठीक 50 वर्षों बाद बिहार में जेपी आंदोलन की तर्ज पर छात्र आंदोलन

छात्रों ने सरकार को उखाड़ फेंकने का किया एलान, डेढ़ माह में देश में दो बड़े छात्र आंदोलन, यूपी में योगी और बिहार में नीतीश छात्रों के निशाने पर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 1974 में छात्रों का एक छोटा सा आंदोलन इतना व्यापक हुआ कि इंदिरा गांधी सरकार को आपातकाल लगना पड़ा। ठीक 50 वर्ष बाद एक बार फिर बिहार में छात्र आंदोलन सुलग रहा है। छात्रों के शांतिपूर्वक मार्च पर बीती रात बिहार पुलिस ने बर्बरतापूर्वक कार्रवाई की जिसके चलते छात्रों का गुस्सा सांतवे आसमान पर है और उन्होंने आर–पार की लड़ाई का मूड बना लिया है। बिहार में ठीक 50 वर्षों बाद एक बार फिर जेपी आंदोलन जैसा छात्र आंदोलन सुलग रहा है। छात्र गुस्से में हैं और नीतीश सरकार से आर–पार का एलान कर दिया है। उधर इस मुद्दे को लेकर सियासी घमासान भी मच गया है। राजद व कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों के निशाने पर भाजपा समर्थित नीतीश सरकार आ गई है।

छात्रों का कहना है कि जब अपनी ही सरकार बात न सुने तो उसे बदल देना चाहिए। बीती रात बिहार लोक सेवा आयोग की 70वीं संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा को रद्द कराने की मांग को लेकर धरने पर बैठने जा रहे छात्रों के हुजूम पर पुलिस ने सर्द रात में लाठियां बरसा दी जिससे दर्जनों छात्रा घायल हो गये। वहीं अभी नवम्बर में यूपी की योगी सरकार ने भी प्रयागराज में छात्रों पर लाठी चार्ज कर दिया था जिससे छात्र उग्र हो गये थे और बाद में भाजपा सरकार को छात्रों के सामने घुटने टेकने पड़े थे।

दोनों घटनाएं मामूली नहीं हैं

डेढ़ माह के भीतर दो राज्यों में दो बड़े छात्र आंदोलन मामूली बात नहीं है। इन दोनों ही आंदोलनों की पृष्ठभूमि एक है। यूपी के छात्रा उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के मनमाने आदेशों के खिलाफ सड़कों पर उतरे थे तो बिहार के छात्रों का टकराव बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) से हो रहा है। यूपी में भी बीजेपी की सरकार और बिहार में भी बीजेपी सपोर्ट सरकार काम कर रही है। यह दोनों आंदोलन इस लिए भी खास है कि इन आंदोलनों को उन छात्रों ने किया जो आईएएस/पीसीएस बनने जा रहे हैं। यानि कि यह छात्र स्वंय समझदार है, इनहें उकसाया नहीं गया है और यह आंदोलन स्वःआंदोलन है बिलकुल वैसे ही जैसे 1974 में जेपी का आंदोलन था और 1999 में ललित नारायण मिश्रा के नेतृतव में छात्रों ने ईंट से ईट बजा दी थी।

छात्र आंदोलन सरकारों के लिए खतरा

छात्रों का आंदोलन अधिक संगठित और तेज़ होता जा रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से, छात्र अपने विचारों और विरोध को अधिक प्रभावी तरीके से सामने ला रहे हैं। छात्र आंदोलनों में अब सरकारों के खिलाफ जन भावना जागरूक करने का एक नया तरीका दिखाई दे रहा है। यदि सरकारें छात्रों की समस्याओं का समाधान नहीं करतीं, तो यह आंदोलन और भी उग्र हो सकता है, जो सरकारों के लिए एक गंभीर चुनौती बन सकता है।

नीतीश सरकार के ताबूत में आखिरी कील साबित होगा आंदोलन

आंदोलनकारी अभ्यर्थी एक बार फिर से गर्दनीबाग धरनास्थल पहुंच गए और धरने पर बैठ गए। अभ्यर्थी प्रदर्शन भी कर रहे हैं। प्रदर्शन में शामिल कटिहार के रहने वाले अनुज कहते हैं, जितनी लाठी मारनी है, सरकार मार ले। लेकिन, हम जायज मांग कर रहे हैं। सरकार कहे तो हमलोग सभी एक पंक्ति में खड़े हो जाएंगे, लाठी मार ले। लेकिन, हम पुनर्परीक्षा पर कायम रहेंगे। यहां सभी जिले के लोग हैं और एक ही मांग कर रहे हैं। पटना की रहने वाली अभ्यर्थी आकृति ने कहा, पुलिस में इंसानियत नहीं है। हम लोग आज निःशब्द हैं। उन लोगों के पुत्र, पुत्रियों के साथ भी यही होगा। बहुत निर्मम तरीके से हम लड़कियों पर लाठीचार्ज किया गया। हम लोगों के पास आज गुस्सा भी है, इमोशन भी है और आंसू भी है। जो लड़की अस्पताल में भर्ती है, उसकी स्थिति जाकर देखिए। हम लोग अपनी मांग पर कायम हैं। जब आठ दिनों तक पहुंच गए हैं, तो आगे भी हम लोग 15 दिनों तक जा सकते हैं। अररिया के रहने वाले आकाश ने कहा, आज हम लोग शांतिपूर्ण तरीके से हाथ जोड़कर बीपीएससी चैयरमेन से मिलने गए थे। लेकिन, पुलिस वालों ने हम लोगों के साथ आतंकवादी की तरह व्यवहार किया, हम लोगों के साथ नक्सल की तरह व्यवहार किया गया है। हम लोग सरकार की नजर में छात्र नहीं हैं। हम लोगों को अपनी बात तक रखने नहीं दिया गया। उन्होंने आगे कहा, अगर हमारी बात सरकार नहीं मानी तो यह लड़ाई उनके लिए ताबूत में आखिरी कील साबित होगी।

बिहार छात्र आंदोलन पूरे देश की समस्या

छात्रों का आंदोलन अवसर शिक्षा व्यवस्था, रोजगार और प्रशासनिक न्याय की ओर इशारा करता है। बिहार में जो कुछ हो रहा है, वह केवल बिहार की समस्या नहीं है, बल्कि यह पूरे देश में छात्र आंदोलनों की बढ़ती स्थिति को दर्शाता है। छात्र आंदोलन इसलिए उग्र हो रहे हैं क्योंकि वे महसूस कर रहे हैं कि उनकी मेहनत और भविष्य को नजरअंदाज किया जा रहा है। बीपीएससी की 70वीं संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा को लेकर छात्रों का विरोध इसलिए है कि उन्हें लगता है कि यह परीक्षा पारदर्शिता की कमी और कुछ परीक्षाओं में गड़बड़ी का शिकार हो सकती है। बिहार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को देखते हुए, जहां बेरोजगारी दर काफी उच्च है, छात्रों के लिए सरकारी नौकरी पाने का सपना उनकी मेहनत का मुख्य लक्ष्य बन चुका है। ऐसे में यदि परीक्षा प्रक्रिया में कोई खामी आती है, तो यह उनके भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा बन सकता है।

योगी सरकार के खिलाफ भी यूपी में हुआ छात्र आंदोलन

यूपी में भी कुछ समय पहले छात्रों ने यूपीपीएससी (उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग) के आदेशों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया था। छात्रों ने यह आरोप लगाया कि आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में गड़बड़ी है और परीक्षा की प्रक्रिया पारदर्शी नहीं है। यूपी में छात्र आंदोलन ने योगी सरकार को हिला कर रख दिया था। इस आंदोलन के बाद योगी सरकार को अपना रुख बदलने पर मजबूर होना पड़ा और कुछ सुधारात्मक कदम उठाए गए। यह घटनाक्रम यह दिखाता है कि जब छात्र एकजुट होकर अपनी आवाज़ उठाते हैं, तो सरकारें उनके दबाव के आगे झुकने के लिए मजबूर हो जाती हैं।

हमेशा जीतते हैं छात्र

अतीत में कई छात्र आंदोलनों ने सरकारों को हिला दिया है और यह प्रमाणित किया है कि छात्र अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाकर सत्ता के निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध आंदोलन 1974 का जयप्रकाश नारायण आंदोलन था, जिसमें छात्रों ने भ्रष्टाचार और शासन की नीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाई थी। इस आंदोलन का असर इतना बड़ा था कि इंदिरा गांधी की सरकार को आपातकाल लगाने की स्थिति उत्पन्न हुई थी। इसके बाद 1990 में जब ललित नारायण मिश्र के नेतृत्व में बिहार में छात्र आंदोलन हुआ, तो वह भी सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती बना।

लालू यादव, प्रियंका गांधी ने भी साधा नीतीश सरकार पर निशाना

बिहार पुलिस द्वारा लाठीचार्ज करने के एक दिन बाद, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने कहा कि पुलिस को लाठीचार्ज नहीं करना चाहिए था और यह गलत था। परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर बीपीएससी अभ्यर्थी बुधवार को पटना में आयोग के कार्यालय का घेराव करने के लिए एकत्र हुए। वहीं, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने राज्य सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा तथा आरोप लगाया कि भाजपा को सिर्फ अपनी कुर्सी बचाना है। प्रियंका गांधी ने अपने व्हाट्सएप चैनल पर पोस्ट किया, हाथ जोड़ रहे युवाओं पर इस तरह लाठी चलाना क्रूरता की पराकाष्ठा है। भाजपा राज में रोजगार मांगने वाले युवाओं को लाठियों से पीटा जाता है। उत्तर प्रदेश हो, बिहार हो या मध्य प्रदेश, युवा अगर अपनी आवाज उठाते हैं तो उन्हें बर्बरता से पीटा जाता है। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे युवा देश के नौजवानों का भविष्य क्या होगा, यह सोचना और उनके लिए नीतियां बनाना सरकारों का काम है। प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया, भाजपा के पास सिर्फ कुर्सी बचाने का दृष्टिकोण है। जो मांगेगा रोजगार, उस पर होगा अत्याचार।

बिहार के मुख्यमंत्री पूरी तरह से भाजपा से संचालित : तेजस्वी यादव

पटना। राजद नेता तेजस्वी यादव ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधा है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री पूरी तरह से भाजपा द्वारा संचालित हैं। यहां के सीएमओ पर भाजपा नेताओं का नियंत्रण है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हमने एक मीटिंग की, हम अपनी पार्टी के ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने की कोशिश कर रहे है, हम अगले चुनाव के बारे में भी चर्चा कर रहे हैं। मुझे यकीन है कि महागठबंधन की सरकार बनेगी। अमित शाह को इस्तीफा देकर अपने बयान पर माफी मांगनी चाहिए, लेकिन बीजेपी वालों में कोई शर्म नहीं है।

सीएम नीतीश के नेतृत्व में सबकुछ बहुत अच्छा चल रहा : सम्राट चौधरी

बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने तेजस्वी यादव के बयान पर पलटवार किया है। सम्राट चौधरी ने कहा कि लालू प्रसाद यादव का परिवार भ्रष्टाचार के लिए ही जाना जाता है। उन्होंने बिहार को लूटा है। उन्होंने कहा कि पहले लालू प्रसाद यादव ने ऐसे बयान दिये और अब उनके परिवार के सदस्य ऐसे बयान दे रहे हैं। ये बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। बिहार के मंत्री मंगल पांडे ने कहा कि बिहार के सीएम नीतीश कुमार के नेतृत्व में सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है। हम सभी बिहार के विकास के लिए काम कर रहे हैं...बिहार उपचुनाव में भी हमने (एनडीए) सभी चार सीटें जीती।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।